jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:42 PM Page 10

देवेंद्र स्वरूप

लेखक देश के लब्धप्रतिष्ठित इतिहासकार हैं। कई पुस्तकों के रचयिता हैं, देश के कई अखबारों में समसामयिक विषयों पर नियमित रूप से लेख लिखते हैं। साप्ताहिक पाञ्चजन्य के संपादक व दीनदयाल शोध संस्थान के उपाध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं। नानाजी की जीवन यात्रा लिखने के लिए उनके अनन्य सहयोगी रहे देवेन्द्र जी ही सर्वाधिक अधिकारिक व्यक्ति हैं।

अब से 94 वर्ष पूर्व 11 अक्टूबर 1916 को शरद पूर्णिमा की चांदनी सब ओर छिटकी हुई थी। तब, महाराष्ट्र के मराठवाडा क्षेत्र के परभणी जिले के हिंगोली तालुका के कडोली नामक छोटे से गांव में अमृतराव देशमुख की धर्मपत्नी राजावाई की कोख से एक पुत्र ने जन्म लिया। तीन पुत्रियों और एक पुत्र के बाद यह बालक पांचवा और सबसे छोटी संतान था। देशमुख घराना होने के कारण अमृतराव के पास प्रतिष्ठा और प्रभाव तो था पर इतने बड़े परिवार के भरण-पोषण एवं देशमुख परिवार के लोकाचार को निभाने लायक आर्थिक साधन नहीं थे। लम्बे काल तक निजामशाही के अधीन रहने के कारण उस क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा तक की सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। अमृतराव और राजावाई दोनों ही अनपढ़ थे। उस समय कौन सोच सकता था कि अभाव और अशिक्षा की गोद में जन्मा यह बालक किसी दिन पूरे देश की श्रद्धा और प्रेरणा का केन्द्र बन जाएगा और राष्ट्र-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने सफल कर्तृत्व की जय पताका फहरायेगा? अब लगता है शायद उस रात शरद पूर्णिमा स्वयं ही राजावाई की कोख में सिमट आयी थी।

शिशुकाल में ही नाना माता-पिता की स्नेहछाया से वंचित हो गए। बड़ी बहन लक्ष्मीबाई का विवाह अकोला जिले के रिसोड़ में प्राईमरी स्कूल के शिक्षक दत्तात्रेय देशपांडे के साथ हो गया। दूसरी बहन मैनाबाई नांदेड़ के बरहाडे परिवार में ब्याही गई। तीसरी बहन सखुबाई या बायडाबाई का विवाह नांदेड़ जिले में जुन्नी नामक स्थान में एक बड़ी उम्र के विधुर के सम्पन्न परिवार में हुआ। नाना के पालन-पोषण का भार बड़े भाई आबाजी देशमुख पर आ पड़ा। अभाव और अशिक्षा के घने अंधेरे से नाना को कितना विकट संघर्ष करना पड़ा, इसका वर्णन उनके अपने शब्दों में ही जानें। 15 नवंबर 1986 को अपनी ममेरी बहन को एक निजी पत्र में नानाजी ने लिखा, "कडोली में मेरी माँ का निधन हुआ था। सच तो यह है कि उसने आत्महत्या की थी। मैं बहुत छोटा था। कडोली बिल्कुल ही देहात है। पिताजी अनपढ़ थे। घर में शिक्षा का वातावरण नहीं था। इसी वजह से मेरी स्कूली शिक्षा ठीक से नहीं हो पायी। बायडाबाई (सखुबाई) का विवाह हुआ नांदेड जिले के गांव जुन्नी के परिवार में। यह उसके पति का दूसरा विवाह था। उनकी पहली पत्नी का निधन हुआ था। वे आयु में बहुत बड़े थे। घर में केवल बायडाबाई व उसके पति

नानाजी अपनी बहनों के साथ

जो खेती करने पास के गांव में चले जाते थे। घर में बाई को अकेले रहना पड़ता था। मैं घर में छोटा था, इसलिए मुझे उसके साथ रहने के लिए जुन्नी भेजा गया। वहां न स्कूल था, न शिक्षक। चौबीस घंटे खाली समय में बाई के साथ पत्ते खेलना, इतना ही काम। खेलते-खेलते मेरी उम्र बढ़ती जा रही थी। मैं 11 साल का हो गया। 1927 की बात है। ताई (लक्ष्मीबाई) के पति का स्थानांतरण चिंचआंवा से रिसोड़ में हुआ था। ताई को मेरे प्रति दया आई और वह करीब-करीब जबरदस्ती करके मुझे जुन्नी से अपने पास रिसोड़ ले गयी। वहां पर मुझे 11 साल की उम्र में तीसरी कक्षा में प्रवेश दिलाकर दत्तोपंत मुझे रोज घर में पढ़ाते थे। उसके बाद मुझे भाऊ मामा (भगवंतराव देशपांडे पाडीकर) ताई के यहां से अपने यहां ले आए, तब से तुम्हारा मेरा परिचय। तुम्हारी भी माँ नहीं थी, शायद इसीलिए तुम्हारे प्रति मेरे मन में आत्मीयतापूर्ण लगाव उत्पन्न हुआ।"

माँ ने आत्महत्या क्यों की? इसका उत्तर भी नानाजी के ही एक अन्य निजी पत्र में मिल जाता है। 19 जुलाई 1984 को सौ. नीलम देशपांडे को अतिथि सत्कार का महत्व बताते हुए नानाजी लिखते हैं कि "अतिथि के द्वारा व्यवस्था में कमी का उल्लेख तो बहुत ही लज्जा का विषय है। मेरी जन्मदात्री माँ ने इसी एक कारण से आत्महत्या कर ली थी, जिसकी जानकारी शायद किसी के स्मरण में नहीं है। उसका घाव आजीवन मेरे हृदय पर बना रहने वाला होने के कारण इस बात को मैं बहुत ही महत्व देता हूँ।"

स्पष्ट है कि आर्थिक दुरावस्था के कारण नानाजी की

नानाजी अपने परिवार के सदस्यों के साथ अपनी षष्टिपूर्ति के अवसर पर परिवार के बीच नानाजी अपने गांव कडोली में